'kks/kkFkhZ dk uke % vjeku vUlkjh

'kks/k funs'kd dk uke % iks0 egsUnz iky 'kekZ

'kks/k fo"k; % Quh'oj ukFk js.kq dk dFkk lkfgR; % vkpfydrk vkSj bfrgkl psruk

foHkkx % fgUnh foHkkx] tkfe;k fefYy;k bLykfe;k ubZ fnYyh&110025

'kks/k&lkj

cht 'kCn% vkpfydrk] vkifuosf'kdrk] bfrgkl psruk] dFkk lkfgR;] yksd laLd`fr

आधुनिक भारत को समझने की दो दृष्टियां मुख्यतौर पर प्रचलित हैं– एक के अनुसार साम्राज्यवादी ब्रिटेन ने आधुनिक संस्थाओं मसलन आधुनिक न्याय प्रणाली, प्रशासन व्यवस्था, शिक्षा व्यवस्था, संचार माध्यम और तकनीक के जरिए भारत को आधुनिक राष्ट्र राज्य के रूप में गठित किया। इसके लिए उसने पारंपरिक सामाजिक आर्थिक संरचना को आधुनिक राजनीतिक आर्थिक संरचना में ढ़ालने का प्रयास किया। इस क्रम में धार्मिक और सांस्कृतिक मूल्यबोध को भी बदलने का के प्रयत्न हुए।

प्रेमचंद ने जिस वैचारिक भावभूमि का निर्माण किया, उस पर पहली महत्त्वपूर्ण कृति 'देहाती दुनिया' नाम से शिवपूजन सहाय ने लिखा। लेकिन शिवपूजन सहाय का 'देहात'–गांव, भारत के गांवों का साधारणीकृत रूप है। गोया भारत के सभी हिस्सों के गांव एक ही तरह के हों। इतना जरूर है कि गांवों में जिस स्वभाविकता और सामान्य जन की सहज जीवनशैली, अनुभव संसार और भावबोध को आधार बनाकर जिस चेतना का निर्माण किया था, वह चेतना सामान्य रूप से भारत के लगभग सभी गांवो में विद्यमान थी। रेणु ने इस सामान्यीकरण में ठोस प्रमाणिकता प्रदान करने के लिए 'अंचल' का प्रयोग करना शुरू कर दिया। रेणु खुद आंचलिक उपन्यास के संदर्भ में कहते हैं कि .. ''आंचिलक उपन्यास से मेरा आशय ऐसे उपन्यास से है, जिसकी समस्याओं को सामाजिक दृष्टिकोण से रेखांकित किया जा सकता है। हालांकि उसमें शिल्प भावना के साथ परिवर्तित युग परिस्थिति के फलस्वरूप जीवनबोध में जो परिवर्तन आता है, उसका भी चिंत्रांकन किया जा सकता है। इस बारे में सिर्फ इतना ही कह सकता हूं कि उपन्यास जगत में इस धारा का प्रयोग मैंने पहली बार किया है।''

इस शोध प्रबंध में रेणु के साहित्य का विलेषण का आधार पर निर्मिति हो रहे उनके इतिहास बोध को निम्न स्थापनाओं का माध्यम से चिन्हित किया जा सकता है

igyk%&आधुनिक औद्यौगिक विकाल का मॉडल वर्चस्व की भावना से परिचालित है। प्रकृति पर विजय इसके विकास का मानक है। पूंजी और विशाल तकनीक पर आधारित औद्योगीकरण और शहरीकरण इसके विकास का मॉडल है। अतएव यह गांव, खेती और गंवई संस्कृति के विरूद्ध है।

nlj%& मानव जीवन अपने अस्तित्व में प्रकृति के उपर निर्भर है। प्रकृति के सह अस्तित्व में ही मानवीय समाज का विकास संभव है। अतः प्रकृति के साथ सामंजस्यपूर्ण जीवनशैली मानव समाज की अस्तित्वगत जरूरत है।

rhlj%& मनुष्य और प्रकृति के सह अस्तित्व पर आधारित विकास पद्धति अपनी प्रकृति में अनिवार्यतः विकेन्द्रीत होगी व स्थानीय होगी।

pkFk%& हर स्थानीय समाज अपने स्थानीय संसाधनों के इस्तेमाल की सर्वश्रेष्ठ विधि से परिचित होता है। उसकी ज्ञान सम्पदा अपने परिवेश के साथ भावनात्मक लगाव और लम्बे साहचर्य से पैदा होती है अतएव स्थानीय समाज का पारंपरिक ज्ञान, स्थानीय संसाधनों के इस्तेमाल की जो तकनीक जानता है, उसके इस्तेमाल से ही मानवीय गरिमा से युक्त सम्मानजनक जीवन उस समाज को उपलब्ध कराय जा सकता है।

ikpo%& स्थानीय समाज के ज्ञान संपदा का अक्षय कोश लोक गाथा, लोकगीत, और लोकसंस्कृति होती है। अतः इसके अध्ययन के द्वारा ही स्थानीय समाजों के संचित ज्ञान का उपयोग राष्ट्र निर्माण के लिए किया जा सकता है।

NBk%& विकेन्द्रीकरण और स्थानीयता पर आधारित विकास की पद्धति ही एक समतामूलक और मानवीय गरिमा से युक्त व्यवस्था का निर्माण कर सकती है। विकास का कोई सार्वभौमिक मानक नहीं हो सकता। इसी तरह से सार्वभौमिक इतिहास लेखन नहीं किया जा सकता। हर स्थानीय समाज का अपना इतिहास है जो स्वयं में संप्रभु और स्वायत है।

Lkkrok%& एक समान विकास का माडल और सार्वभौमिक इतिहास लेखन की कोशिश दोनों अपनी प्रकृति में एक ही है। यह मूलतः वर्चस्व की भावना पर आधारित है। जिन संस्थाओं पर यह आधारित है और जिन उपकरणों का यह इस्तेमाल करती है वह वर्चस्व की भावना पर आधारित होने की वजह से अपनी प्रकृति में शोषणकारी है।

अतः स्थानीयता और विकेन्द्रीकरण पर आधारित विकास मॉडल के साथ–साथ स्थानीय इतिहास लेखन की कोशिश ही अपनी प्रकृति में समतामूलक और भ्रातृत्व की भावना पर आधारित होगी।

आंचलिकता इन्हीं मान्यताओं को मूर्तिमान करने वाली साहित्यिक विधा है और फणीश्वरनाथ रेणु इसके पुरोधा।